अध्याय 27

याकूब का एसाव की आशीष को चुराना

इसहाक के परिवार की कथा अध्याय 27 में, इच्छा के टकराव के कारण उत्पन्न हुए संकट के साथ, आगे बढ़ती है। इसहाक और रिबका को पैदा हुए दोनों पुत्रों के भिन्न भिन्न स्वभाव और जीवनशैलियाँ थे। इसी के साथ, माता पिता दोनों के ही अपने अपने चहेते पुत्र थे, और प्रत्येक पुत्र का व्यक्तित्व उस माता/पिता से भिन्न था जिसका वह चहेता था। इसहाक, जो की कुछ कुछ निष्क्रिय और कृपालु पिता था, अपने पुत्र एसाव, जो की एक बीहड़ और बाहर रहने वाला व्यक्ति था, पर कृपादृष्टि रखता था। एसाव जंगली जानवरों का शिकार करने में निपुण था, जिसको खाने में उसके पिता को बहुत आनंद आता था। इसहाक की पत्नी, रिबका, हठीली और नियंत्रित करने वाली थी। वह घर के मामलों में हेरफेर करती और उसने अपने चहेते बच्चे, याकूब, के लिए आशीष प्राप्त करने के लिए, अपने पति के अंधेपन का लाभ भी उठाया। यह पुत्र घर के आसपास ही रहता था, पशुओं की देखभाल करते हुए और तम्बू के इर्दगिर्द छोटे मोटे काम करते हुए।

जैसे जैसे यह, इच्छा के टकराव, पक्षपात, विभिन्न स्वभाव, और कठोर छल की कहानी विकसित होती है, वह इस बात का उदाहरण देती है की "कोई नगर या घराना जिसमे फूट होती है, बना न रहेगा" (मत्ती 12:25)। विश्वासघात, डर, द्वेष, और नफरत के घाव भी, जो झूठ और छल के परिणाम से होते हैं, इस अध्याय में दिखाई देते हैं; और इन सबने इन माता पिता के और उनके पुत्रों के जीवनों और हृदयों को गहरे दुःख से भर दिया। कुछ घाव अंतत पच्चीस वर्ष बाद भरे (33:1-17); अन्य कभी पूरी तरह भरे ही नहीं। एसाव अपनी खोई हुई आशीष पर फूट फूटकर रोया और बहुत समय तक अपने मन में याकूब के लिए बैर रखे रहा। याकूब ने उस भाई के डर से घर छोड़ दिया, जो उसकी हत्या करना चाहता था और पद्दनराम में अपने लिए पत्नी खोजने के लिए भी। रिबका ने अपने चहेते पुत्र का साथ खो दिया; वाचन में ऐसा कोई संकेत नहीं है की वह दोबारा कभी उससे मिल सकी। इसहाक के शोक के बारे में अधिक जानकारी नहीं है, परन्तु वह बहुत गहरा होगा जो उसके पत्नी और छोटे पुत्र के ठगी और छल के कारण आया था।

यहाँ पर दर्शाई गई दुःखद घटना इस कथा का अंतिम शब्द नहीं है। यह

केवल उस लगातार चलने वाले नाटक का एकमात्र अंक है, जो इन पात्रों के मंच से चले जाने के बाद भी चलता रहता है। उनकी कहानी मुख्य रूप से मानवी पाप, कष्ट, और मनमुटाव पर ज़ोर नहीं डालती। इसके विपरीत, जैसे यह कहानी आगे बढ़ती है, हम परमेश्वर के अद्‌भुत अनुग्रह से और अधिक अवगत हो जाते हैं जो दुर्बल मनुष्य जाति के साथ कार्य करता है। वह ऐसे लोगों को बुलाता, उन्हें आशीष देता, और उनका प्रयोग करता है - इसलिए नहीं क्योंकि वे योग्य या काबिल हैं, परन्तु उनके दुर्बलताओं और पापों के बावजूद। उसकी छुटकारे की योजना ने एक ऐसे लोगों का निर्माण किया जो अंतत सम्पूर्ण संसार में आशीष लाएंगे अब्राहम के वंश कि प्रतिज्ञा के द्वारा: यीशु मसीह (मत्ती 1:1-16; गलातियों 3:16)।

इसहाक की आशीष के लिए षड्यंत्र और जवाबी षड्यंत्र (27:1-17)

इसहाक का अनुरोध (27:1-4)

[1]जब इसहाक बूढ़ा हो गया, और उसकी आँखें ऐसे धुंधली पड़ गई कि उसको सूझता न था, तब उसने अपने जेठे पुत्र एसाव को बुलाकर कहा, "हे मेरे पुत्र," उसने कहा, "क्या आज्ञा।" [2]उसने कहा, "सुन, मैं तो बूढ़ा हो गया हूँ, और नहीं जानता की मेरी मृत्यु का दिन कब होगा: [3]इसलिए अब तू अपना तरकश और धनुष आदि हथियार लेकर मैदान में जा, और मेरे लिए अहेर कर ले आ। [4]तब मेरी रूचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बनाकर मेरे पास ले आना, कि मैं उसे खाकर मरने से पहले तुझे जी भर के आशीर्वाद दूँ।"

आयतें 1, 2. जैसे समय बीता, इसहाक की **वृद्धावस्था** ने **उसकी आँखों** पर प्रभाव डाला; उनकी धुंधलाई हुई रोशनी देखने के लिए पर्याप्त न थी; प्राय, बुज़ुर्ग लोग सामान्य रूप से कमज़ोर आँखों और अंधेपन का शिकार हो जाते थे (48:10; 1 शमूएल 3:2; 4:15; 1 राजा 14:4; देखें व्यव. 34:7)। देखने में असमर्थ, इसहाक ने अपने **बड़े पुत्र एसाव को अपने पास बुलाया**, और उसने यह कहते हुए प्रतिसाद दिया **"क्या आज्ञा।"** उसके पिता ने उसपर प्रकट किया कि वह इस आयु में पहुँच चूका है कि वह सोचता है की उसकी **मृत्यु का समय** निकट होगा, तो वह अपने निधन से पूर्व पारंपरिक आशीष की तयारी करना चाहता था।

यह जानना असंभव है की इस अध्याय और इससे पूर्व के अध्याय की घटनाओं के बीच कितना समय बीत चुका था। यदि अध्याय 27 की घटनाएं उनसे तुरंत बाद में घटीं जो अध्याय 26 में वर्णित हैं, तो वह कुलपति लगभग सौ वर्ष का था (25:26; 26:34) और इसके बाद और अस्सी वर्षों तक जीने वाला था, इससे पहले की 180 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हुई (35:28)।[1] यदि वे घटनाएँ बाद में घटीं तो इसहाक शायद 130 वर्ष का होगा। इसहाक वृद्ध और अँधा भी था, और वह शारीरिक रूप से इतना निर्बल था की उसे उठ कर बैठने

की लिए ज़ोर देना पड़ता था (27:19, 31)। इसीलिए एसाव ने यह अंदाज़ा लगाया कि उसके पिता की मृत्यु निकट है (27:41)। परन्तु, इस समय के पश्चात इसहाक ने अपनी कुछ शक्ति दोबारा प्राप्त कर ली होगी क्योंकि इसके बाद वह कम से कम तीस वर्ष और जीवित रहा (देखें 31:41; 35:27, 28)।

आयतें 3, 4. इसहाक ने अपने पुत्र एसाव को निर्देश दिया, **"इसलिए अब तू अपना तरकश और धनुष आदि हथियार लेकर मैदान में जा, और मेरे लिए अहेर कर ले आ।"** सफलता पूर्वक शिकार कर लेने के बाद, एसाव को अपने पिता के लिए ऐसा स्वादिष्ट **भोजन बनाना** था जो उसकी रूचि के अनुसार हो।[2] 25:28 में, इसहाक के एसाव को चहेता बनाने का ज़िम्मा इस बात को दिया गया है कि "वह अहेर का मांस खाया करता था।"

इसहाक ने इस विशेष अवसर का जो कारण दिया वह था, **"मरने से पहले तुझे जी भर के आशीर्वाद दूँ** [ताकि मेरी आत्मा तुझे आशीर्वाद दे सके]।**"** यहाँ दिया वाक्यखण्ड निर्देश देने वाला है: इसहाक ने केवल यह नहीं कहा "ताकि मैं तुझे आशीष दे सकूँ।" हालाँकि यह सच है की "आत्मा" (נֶפֶשׁ, *नेपेश)* शब्द का प्रयोग कभी कभी मुहावरे के रूप में किसी एक "व्यक्ति" या "जीवन" के लिए किया जाता है, पर यहाँ इसका अर्थ अधिक गहरा और उत्साहपूर्ण जान पड़ता है। जैसे की इसहाक कह रहा हो, "मेरे अस्तित्व *[नेपेश]* की गहराइयों से, मैं तुझे आशीष देना चाहता हूँ।"

इसहाक ने इस अवसर का वर्णन याकूब से नहीं किया। यह अटपटा लगता है क्योंकि इस प्रकार की आशीष एक महत्वपूर्ण घटनाएँ होती थीं जिनमे सभी पुरुष संतानों को उपस्थित होना होता था। पिता सही क्रम में प्रत्येक को आशीष देता, परिवार के भीतर अधिकार के उत्तराधिकार की व्यवस्था करते हुए, जैसे की बाद में याकूब ने मिस्र में किया (49:1-28)।[3] यह स्पष्ट दिखाई देता है की इसहाक का उद्देश्य याकूब को पूरी तरह अनदेखा कर देना था। या तो वह यहोवा की रिबका को दी भविष्यवाणी को नज़रअंदाज़ कर रहा था या फिर भूल गया था की "बड़ा" "छोटे" (याकूब) के अधीन होगा (25:23)।

रिबका की योजना (27:5-17)

[5]तब एसाव अहेर करने को मैदान में गया। जब इसहाक एसाव से यह बात कर रहा था, तब रिबका सुन रही थी। [6]इसलिए उसने अपने पुत्र याकूब से कहा, "सुन, मैंने तेरे पिता को तेरे भाई एसाव से यह कहते सुना हैं, [7]'तू मेरे लिए अहेर करके उसका स्वादिष्ट भोजन बना, कि मैं उसे खाकर तुझे यहोवा के आगे मरने से पहले आशीर्वाद दूँ।' [8]इसलिए अब, हे मेरे पुत्र, मेरी सुन, और यह आज्ञा मान, [9]कि बकरियों के पास जाकर बकरियों के दो अच्छे अच्छे बच्चे ले आ, और मैं तेरे पिता के लिए उसकी रूचि के अनुसार उनके मांस का स्वादिष्ट भोजन बनाऊँगी। [10]तब तू उसको अपने पिता के पास ले जाना, कि वह उसे खाकर मरने से पहले तुझको आशीर्वाद दे।" [11]याकूब ने अपनी माता रिबका से कहा, "सुन, मेरा भाई

एसाव तो रोंआर पुरुष है, और मैं रोमहीन पुरुष हूँ। 12कदाचित् मेरा पिता मुझे टटोलने लगे, तो मैं उसकी दृष्टी में ठग ठहरूंगा, और आशीष के बदले शाप ही कमाऊंगा।" 13उसकी माता ने उससे कहा, "हे मेरे पुत्र, शाप तुझ पर नहीं मुझी पर पड़े, तू केवल मेरी सुन, और जाकर वे बच्चे मेरे पास ले आ।" 14तब याकूब जाकर उनको अपनी माता के पास ले आया, और माता ने उसके पिता की रूचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बना दिया। 15तब रिबका ने अपने पहिलौठे पुत्र एसाव के सुन्दर वस्त्र, जो उसके पास घर में थे, लेकर अपने छोटे पुत्र याकूब को पहिना दिए; 16और बकरियों के बच्चों की खालों को उसके हाथों में और उसके चिकने गले में लपेट दिया; 17और वह स्वादिष्ट भोजन और अपनी बनाई हुई रोटी भी अपने पुत्र याकूब के हाथ में दे दी।

आयत 5. जब **इसहाक** अपने चहेते पुत्र, एसाव, से बातें कर रहा था, तो **रिबका** ने उसके शब्द सुन लिए। कदम उठाने से पहले, उसने **एसाव** के **अहेर करने को मैदान में** जाने तक प्रतीक्षा की। यह स्पष्ट है की रिबका और एसाव के बीच बहुत अच्छी बोलचाल नहीं थी, और उनमे से प्रत्येक की अपनी स्वयं की कार्य सूची थी।

आयतें 6, 7. इस घटनाचक्र में **रिबका** की प्रमुख भूमिका बन गई थी, जैसे उसने याकूब के पास जाकर अपनी योजना प्रकट की। उसने उजागर किया की इसहाक ने **एसाव** से कहा था, **"तू मेरे लिए अहेर करके उसका स्वादिष्ट भोजन बना, कि मैं उसे खाकर तुझे यहोवा के आगे मरने से पहले आशीर्वाद दूँ।"**

जन्मसिद्ध अधिकार (בְּכֹרָה, *ब'कोराह)* और मृत्यु शैया की आशीष (בְּרָכָה, *ब'राकाह)* के बीच का वास्तविक सबंध अस्पष्ट है। जबकि जिसके पास जन्मसिद्ध अधिकार होता था - प्रायः एक पहिलौठा - उसे विरासत का दोगुना हिस्सा तक मिल सकता था, परन्तु उत्पत्ति 49:1-28 यह संकेत देता है की ऐसा हमेशा नहीं होता था। कुछ लोग यह विश्वास करते हैं कि मृत्यु शैया की आशीष केवल जन्मसिद्ध अधिकार की आशीष का पुष्टिकरण करना है, और कि वे केवल एक ही आशीष के दो भाग थे। परन्तु, एसाव को इनको अलग अलग होने के रूप में समझा, और जब इसहाक ने उसको बताया कि उसके छोटे भाई ने उससे छल किया था, तो उसने यह कहते हुए दोगुने भाग की हानि का दावा किया कि, "क्या उसका नाम याकूब यथार्थ नहीं रखा गया? उसने मुझे दो बार अड़ंगा मारा मेरा पहिलौठे का अधिकार तो उसने ले ही लिया था; और अब देख, उसने मेरा आशीर्वाद भी ले लिया है" (27:36)।[4]

इस वृत्तांत में रिबका का उद्देश्य क्या था? इसका पता लगाना कठिन है। उसके आत्मिक मूल्य और उद्देश्य भले प्रतीत होते थे, क्योंकि वह जानती थी कि याकूब परमेश्वर का चुना हुआ जन है (25:23)। जब वह 27:7 में अपने पति का ज़िक्र करती है तो वह कहती हैं कि आशीष "यहोवा के आगे" दी जाएंगी। शायद उसने पहचाना कि यह वह निर्णायक पल है जिस पर परिवार का भविष्य टिका है और वह मृत्यु शैया पर पड़े अपने पति को गलत पुत्र को आशीषें देने से रोकना

चाहती थी। यदि रिबका के कार्य का यही कारण था तो वह यह सुनिश्चित कर रही थी कि जो सही है वही हो। यदि अब्राहम की सम्पन्नता से सम्बन्धित यहोवा के दर्शन और प्रतिज्ञाओं को पूरा होना था, तो उसे और याकूब को ऐसा करके इसे इसहाक और एसाव की विश्वासयोग्यता से बचाना था। परन्तु जिस तरह से उसने अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहा वह भयावह था! इसमें इसहाक को इस प्रकार धोखा देना था जिससे परिवार में दुःख और कड़वाहट उत्पन्न होती जो बहुत सालों तक रहती।

आयत 8. रिबका की याकूब को स्थिति की गंभीरता समझाना और तुरंत कदम उठाने की आवश्यकता उसके आदेश में स्पष्ट दिखाई देते हैं। पहले उसने कहा, **"मेरी सुन, और आज्ञा मान।"** पुराने नियम में (שְׁמַע, *त्सवाह)* शब्द का प्रयोग आम नहीं है, जिस प्रकार से यह यहाँ हुआ है, एक स्त्री वाची विषय के साथ (देखें एस्तेर 4:5)। परमेश्वर ने, शास्त्र में एक प्रमुख अधिकारी के रूप में, इस शब्द का अक्सर प्रयोग किया है। जो निचले अधिकार के लोगों ने, जैसे की राजा और नबी, आदेश दिए; और पिताओं ने अपने बच्चों को आदेश दिए। इस स्थिति में, रिबका ने अपने सारे मातृत्व के अधिकार को जुटाया ताकि वह याकूब से अपना आदेश मनवा सके। जो विभिन्न तरीके इन माता पिता ने अपने बच्चों से निपटने में किए वे ध्यान देने योग्य हैं। इसहाक ने एसाव से "कहा" 27:5 में, परन्तु रिबका ने याकूब को "आदेश" दिया। विभिन्न शब्दों का प्रयोग यह सुझाव दे सकता है की वह माँ अपने छोटे पुत्र पर नियंत्रण रखती थी, जबकि पिता का अपने बड़े पुत्र के साथ एक कोमल संबंध था।

आयतें 9, 10. रिबका का याकूब को आदेश था की वह **"बकरियों के पास जाकर बकरियों के दो अच्छे अच्छे बच्चे ले आ,"** ताकि वह उसके इसहाक के लिए स्वादिष्ट भोजन तैयार कर सके। पाठ यह प्रकट कर चूका है की याकूब एक अच्छा बावर्ची था (25:27-34); परन्तु, उसकी माँ की सोच में, इस अवसर पर गलती की कोई गुंजाईश नहीं होनी चाहिए। रिबका को आत्मविश्वास था कि वही उस भोजन वस्तु को तैयार करना और सही मसाले डालना जानती थी इसहाक को यह धोखा देने की लिए, ताकि वह सोचे की वह वन से लाए हुए जंगली शिकार का सेवन कर रहा है, ना कि झुण्ड से ली गई एक छोटी बकरी का। जब उसने भोजन बना लिया, तो उसने याकूब से कहा कि वह उसे अपने **पिता के पास ले जा** सकता है ताकि वह **मृत्यु से पहले** उसको **खाकर** उसे **आशीष दे** सके।

आयतें 11, 12. याकूब जानता था की उसकी माँ उसे उसके पिता के समक्ष एसाव होने का स्वांग रचने की लिए कह कर उसे धोखा देने के लिए कह रही थी। उसने उत्तर दिया, **"सुन, मेरा भाई एसाव तो रोंआर पुरुष है, और मैं रोमहीन पुरुष हूँ"** (देखें 25:25)। वह जानता था की यदि इसहाक ने उसे छू कर परखना चाहा, तो वह तुरंत चोरी को पकड़ लेगा और अपने छोटे पुत्र को एक धोखेबाज़ के रूप में देखेगा। इब्रानी वर्णन में क्रिया कृदंत है תָּעַע *(था'आ)*, जिसका शाब्दिक अनुवाद किया जा सकता है "ठट्ठा करने वाला" (देखें 2 इतिहास 36:16) या "चालबाज़" (NJPSV)। बाद में, मूसा की व्यवस्था उस व्यक्ति को

अपराधी ठहराती है जो किसी अपंग का लाभ उठाए, विशेषकर एक अंधे का (लैव्यव्य. 19:14; व्यव. 27:18)। यदि यह धारणा याकूब के समय में समझी भी जाती थी, तो भी उसका उसकी माँ के प्रति संदेह किसी नैतिक सिद्धांत पर आधारित नहीं था। इसके विपरीत, उसे केवल इस बात का डर था कि उसका पिता उसके छल को पकड़ लेगा; न कि यह, की एक **आशीष** के बजाय उसे एक ऐसा **श्राप** प्राप्त होगा जिसे वापस नहीं लिया जा सकेगा।

कनान पर विजय से पहले, जब मोआबियों ने इस्राएल को शापित करने के लिए बालम को किराए पर लिया, परमेश्वर ने उसके शब्दों को आशीष में बदल दिया था (गिनती 22:4-6, 12; 23:7, 8; व्यव. 23:5; नहेम्य. 13:2)। वह एक असाधारण मामला था, क्योंकि परमेश्वर ने नबी को अपने लोगों को शापित करने से रोक रखा था। इसके अलावा, यह घटना याकूब के जीवन से काफी बाद में घटी थी। कोई भी बात यह नहीं सुझाती की याकूब को अच्छा नतीजा मिलने का कोई भी कारण था यदि उसके पिता को उसके छल के बारे में पता चल जाता तो। एक नियम था, की यदि एक बार किसी व्यक्ति ने आशीष की या शाप की घोषणा कर दी, तो उसे वापस नहीं लिया जा सकता था।

आयत 13. याकूब का यह डर निकालने के लिए, की इसहाक को उसके छल के बारे में पता चल जाएगा और वह उसपर आशीष के बजाय शाप की घोषणा कर देगा, रिबका ने उसे यह कहते हुए आश्वस्त किया, **"हे मेरे पुत्र, शाप तुझपर नहीं, मुझी पर पड़े।"** दूसरे शब्दों में, उसने याकूब से उसके पिता की आशीष का सम्पूर्ण लाभ मिलने का वादा किया, और फिर भी उसे शाप का कोई भी दंड नहीं भुगतना पड़ेगा, यदि उनका षड्यंत्र सफल नहीं भी होता। रिबका अपनी योजना की खातिर अपने जीवन और विवाह में गंभीर परिणामों को भुगतने के लिए तैयार थी; इसीलिए, उसने याकूब से (अपनी) बात की आज्ञा मानने के लिए और दो छोटी बकरियां लाने की लिए कहा, ताकि वह इसहाक के लिए भोजन तैयार कर सके (27:9)।

आयतें 14-17. अगली कुछ आयतें वर्णन करती हैं उन कदमों का जो रिबका ने अपनी कपटी योजना को पूरा करने के लिए उठाए। जैसे ही याकूब बकरियों को **अपनी माँ के पास लाया**, उसने वैसा **स्वादिष्ट भोजन** तैयार किया जैसे इसहाक को **पसंद** था (27:4, 7, 9)। यहाँ पर, पाठ फिर से इसहाक के शिकार के लिए भूख का वर्णन करता है, जिसके परिणाम स्वरुप एसाव याकूब से बढ़कर उसका चहेता बन गया था और परिवार के बीच कलह और फूट उत्पन्न हो गए थे।

हालाँकि **रिबका** ने उसके पति के उस छल को पकडे जाने के बारे में कुछ नहीं कहा था, यदि उसके छोटे पुत्र के कपड़ों की महक उसके बड़े पुत्र जैसी ना हुई तो, फिर भी उसने कोई भी कसर नहीं छोड़ी थी। उसने **याकूब को एसाव के उत्तम वस्त्र पहनाए और फिर छोटी बकरियों के** [रोएँ वाले] **खालों को उसके हाथों और उसकी गर्दन के कोमल भाग पर लगाया।** कुछ टीकाकार इस विचार को बेतुका बताकर ठुकरा देते हैं कि इसहाक रिबका की इस भद्दी चालाकी से

धोखा खा सकता था; परन्तु, यह वास्तव में एक हृदय स्पर्शी साक्ष्य है की उसके पति का शारीरिक सामर्थ कितना घट गया था। नाहीं केवल इसहाक के आँखों की रौशनी असफल हो गई थी, परन्तु उसके स्पर्श करने का बोध भी निर्बल हो गया होगा। अंतत, उसने वह **स्वादिष्ट भोजन, रोटी के साथ**, जो उसने बनाया था, अ**पने पुत्र याकूब को दिया** ताकि वह उस भोजन को इसहाक के पास ले जा सके।

इसहाक की याकूब को आशीष धोखा दिए जाने के बाद (27:18-29)

18तब वह अपने पिता के पास गया और कहा, "हे मेरे पिता," उसने कहा, "क्या बात है? हे मेरे पुत्र, तू कौन है?" 19याकूब ने अपने पिता से कहा, "मैं तेरा जेठ पुत्र एसाव हूँ। मैंने तेरी आज्ञा के अनुसार किया है; इसलिए उठ और बैठकर मेरे अहेर का मांस में से खा, कि तू जी से मुझे आशीर्वाद दे।" 20इसहाक ने अपने पुत्र से कहा, "हे मेरे पुत्र, क्या कारण है की वह तुझे इतनी जल्दी मिल गया?" उसने यह उत्तर दिया, "तेरे परमेश्वर यहोवा ने उसको मेरे सामने कर दिया।" 21फिर इसहाक ने याकूब से कहा, "हे मेरे पुत्र, निकट आ, मैं तुझे टटोलकर जानूं कि तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव है कि नहीं।" 22तब याकूब अपने पिता इसहाक के निकट आया, और उसने उसको टटोलकर कहा, "बोल तो याकूब का सा है, पर हाथ एसाव ही के से जान पड़ते हैं।" 23और उसने उसको नहीं पहचाना, क्योंकि उसके हाथ उसके भाई के से रोंआर थे, अतः उसने उसको आशीर्वाद दिया। 24और उसने पूछा, "क्या तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव है?" उसने कहा, "हाँ, मैं हूँ।" 25तब उसने कहा, "भोजन को मेरे निकट ले आ, कि मैं अपने पुत्र के अहेर के मांस में से खाकर, तुझे जी से आशीर्वाद दूँ।" तब वह उसको उसके निकट ले आया, और उसने खाया; और वह उसके पास दाखमधु भी लाया, और उसने पिया। 26तब उसके पिता इसहाक ने उससे कहा, "हे मेरे पुत्र, निकट आकर मुझे चूम।" 27उसने निकट आकर उसको चूमा; और उसने उसके वस्त्रों का सुगंध पाकर उसको यह आशीर्वाद दिया, "देख मेरे पुत्र की सुगंध जो ऐसे खेत की सी है जिस पर यहोवा ने आशीष दी है; 28परमेश्वर तुझे आकाश से ओस, और भूमि की उत्तम से उत्तम उपज, और बहुत सा अनाज और नया दाखमधु दे। 29राज्य राज्य के लोग तेरे अधीन हों, और देश देश के लोग तुझे दण्डवत् करें। तू अपने भाइयों का स्वामी हो, और तेरी माता के पुत्र तुझे दण्डवत् करें। जो तुझे शाप दे वे आप ही शापित हों, और जो तुझे आशीर्वाद दें वे आशीष पाएं।"

आयत 18. यह उत्पत्ति के सबसे रोमांचक दृश्यों में से एक है, पाठकों को इस विचार में डालते हुए की क्या इसहाक जान पाएगा की उसका छोटा पुत्र उससे छल करने कि एक निर्दयी योजना में शामिल था और क्या वह उसकी इच्छा को विफल करेगा। जैसे ही याकूब ने इसहाक के तंबू में प्रवेश किया, उसने एक अलग अनुरोध किया बोलने के लिए, यह कहते हुए, **"हे मेरे पिता।"** इसहाक ने उसकी उपस्थिति को मान्यता देते हुए प्रतिक्रिया की, और फिर एक संदेहजनक

प्रश्न किया: **"हे मेरे पुत्र, तू कौन है?"**

आयत 19. याकूब ने झूठ की एक शृंखला की शुरुआत की। पहले, उसने कहा, **"मैं एसाव हूँ,"** फिर उसने कहा, **"तेरा पहिलौठा।**" फिर उसने कहा, **"मैंने वैसे ही किया जैसा तूने मुझसे कहा था।"** उसने यह दावा किया की उसने इसहाक की आज्ञा का पालन करते हुए एक जंगली जानवर को मारा था, और उसके लिए एक स्वादिष्ट भोजन वस्तु तैयार करके ले आया था। इसीलिए वह अपने पिता से आग्रह करता है, **"उठ और बैठकर मेरे अहेर का मांस में से खा, कि तू जी से मुझे आशीर्वाद दे।**" इस प्रार्थना की तत्परता इस तथ्य को प्रकट करती है की याकूब जानता था की उसके पिता को अपना भोजन समाप्त करना था और उसपर आशीष की घोषणा करनी थी इससे पहले के एसाव पहुंचे और उसकी लज्जाजनक धोखाधड़ी का पर्दाफाश करे।

आयत 20. इसहाक यह जानता था की एसाव एक निपुण शिकारी है, परन्तु वह उलझन में था क्योंकि उसे उसके कार्य पर भेजे बहुत कम समय ही बीता था। उसने पूछा, **"हे मेरे पुत्र, क्या कारण है की वह तुझे इतनी जल्दी मिल गया?"** उसके पिता की इस चुनौती ने याकूब को जैसे अनायास ही धर दबोचा था। उसका उत्तर दोगुना दुखद था; क्योंकि उस झूठ ने यहोवा के पवित्र नाम को आह्वान दिया था। याकूब ने उत्तर दिया, **"तेरे परमेश्वर यहोवा ने उसको मेरे सामने कर दिया।"** परमेश्वर के नाम का इस छलपूर्वक दुरूपयोग करने से, याकूब का पाप और गहरा हो गया था। वह यह दावा कर रहा था की उसके, भोजन के साथ, शीघ्र लौटने के लिए परमेश्वर ज़िम्मेदार है। इसके अतिरिक्त, वे शब्द, "तेरा परमेश्वर" शायद यह प्रकट करते हैं, की उसके जीवन के इस क्षण तक, याकूब यहोवा को अपने स्वयं के परमेश्वर के रूप में नहीं देखता था। बाद में, जब उसने उसे अपने स्वयं का परमेश्वर बनाने का निर्णय किया, तब उसने अपनी वचनबद्धता के साथ शर्तें जोड़ीं (28:20, 21; देखें 31:5, 42; 32:9)।

आयतें 21, 22. याकूब के शब्दों से असंतुष्ट इसहाक ने कहा, **"हे मेरे पुत्र, निकट आ, मैं तुझे टटोलकर जानूं कि तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव है कि नहीं।"** रिबका ने अच्छी तरह उसका भेस बदल दिया था अपने वृद्ध पति को धोखा देने के लिए। इसलिए जब **याकूब इसहाक के निकट आया**, उसने हाथ बढ़ाया, **उसे महसूस किया**, और गड़बड़ी की सम्भावना जताई: **"बोल तो याकूब का सा है, पर हाथ एसाव ही के से जान पड़ते हैं।"**

आयत 23. इस पड़ाव पर, लेखक ने पाठक के लिए एक स्पष्टीकरण जोड़ा: **उसने उसको नहीं पहचाना, क्योंकि उसके हाथ उसके भाई के से रोंआर थे।** इसहाक ने याकूब को सुना पर उसने सोचा की उसने उसने एसाव को महसूस किया है; तो **उसने उसे आशीष दी।** इस कथन से लेखक का क्या तात्पर्य था, जबकि मृत्यु शैया की औपचारिक आशीष 27:27 तक नहीं दी गई थी? एक विचार यह है की इसहाक द्वारा 27:23 में दी गई आशीष कम विशेष है उसकी तुलना में जो बाद में दी गई।

आयत 24. जब रिबका ने योजना की कल्पना की तब, स्पष्ट रूप से उसने

दोनों जुड़वाँ भाइयों की आवाज़ के अंतर को छोड़ बाकि सभी बातों के बारे में सोचा था; इसलिए वह याकूब को अपने भाई की आवाज़ की नक़ल करने का प्रशिक्षण देने में असफल रही थी। इसके कारण इसहाक के मन में उस व्यक्ति की पहचान के प्रति, एक रेंगता हुआ, संदेह उतपन्न हुआ जिससे वह बात कर रहा था, और उसने पूछा, **"क्या तू सच में मेरा पुत्र एसाव ही है?"** उसके पिता के प्रश्न ने याकूब को बेचैन कर दिया होगा, परन्तु उसने उत्तर दिया, **"हाँ मैं हूँ।"**

आयत 25. अपने पुत्र का दृढ़ आश्वासन पाने के बाद, इसहाक ने कहा, **"भोजन को मेरे निकट ले आ, कि मैं अपने पुत्र के अहेर के मांस में से खाकर, तुझे जी से आशीर्वाद दूँ।"** इस अनुरोध को पूरा करने के लिए, याकूब ने वह स्वादिष्ट भोजन अपने पिता को दिया, और **उसने उसे खाया**। याकूब ने **उसके लिए दाखरस भी लाया** था, जो **उसने पिया**। याकूब अपने पिता के लिए दाखरस क्यों लाया था? जबकि उसके मूल के निवेदन में यह शर्त शामिल नहीं थी, हम इसके बारे में निश्चित नहीं हो सकते। परन्तु, प्राचीन निकट पूर्वी संस्कृति के अधिकारी ये सुझाव देते है: प्रथम, प्राचीन समय में भोजन के समय दाखरस एक सामान्य पेय होता था, विशेष करके इस प्रकार के महत्पूर्ण भोजन के समय (देखें 14:18-20)। इसहाक को इस बात को विशेष तौर से बताने की ज़रुरत नहीं थी की वह इस प्रकार के भोजन के साथ दाखरस होने की अपेक्षा कर है। दूसरा, याकूब जानता था की उसका पिता दाखरस पीता है; और शायद उसने यह आशा की होगी कि वह इतना पी ले की उसका असर उसकी आंतरिक शक्ति पर पड़ सके, ताकि वह और अधिक जाँच पड़ताल करने वाले प्रश्न न पूछे और उसकी योजना को विफल न करे। इनमें से दोनों या एक कारण होगा इस महत्पूर्ण अवसर पर याकूब के अपने पिता को दाखरस परोसने का।

आयत 26. स्पष्ट है कि, **इसहाक** ने इतना दाखरस नहीं पिया कि उसका दिमाग नम पड़ जाए, क्योंकि इस पूरे मामले के बारे में उसे अभी भी संदेह था। हालाँकि उसकी आँखें कमज़ोर थी और उसका सुनना जैसे उसके साथ खेल खेल रहा था, उसने प्रश्न को सुलझाने के लिए एक अंतिम प्रयास किया: यह उसका बड़ा पुत्र था या उसका छोटा पुत्र? यह जानने के लिए, उसने याकूब से कहा, **"हे मेरे पुत्र, निकट आकर मुझे चूम।"** यह निवेदन करते हुए, उस वृद्ध कुलपति ने यह आत्मविश्वास जताया कि उसके सूंघने की शक्ति अभी भी काफ़ी अच्छी है, उसे किसी भी संभावित धोखे से आगाह करने के लिए।

आयत 27. इस निवेदन के प्रति प्रतिक्रिया करते हुए, याकूब ने अपने पिता के निकट जाकर **उसको चूमा**; **और उसने** [याकूब] **उसके वस्त्रों का सुगंध पाकर उसको यह आशीर्वाद दिया**। याकूब के पहने कपड़ों की गंध और बाँहों और गर्दन पर पहनी खालों के कारण, इसहाक अंततः निश्चिन्त हो गया की यह एसाव ही है। और इस तरह, वह छल काम कर गया, और इसहाक ने आशीष देना शुरू किया एसाव के खुले मैदानों, और स्थानों जहाँ वह शिकार कर सकता था, के प्रति प्रेम का वर्णन करते हुए। उसी के अनुसार, उसने आभास किया, **"देख, मेरे पुत्र की सुगंध जो ऐसे खेत की सी है जिसपर यहोवा ने आशीष दी है।"**

आयत 28. पहली आशीष में से अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा गूंजती है (12:1, 7) उस भूमि के उपजाऊपन का वर्णन करने के द्वारा: **"परमेश्वर तुझे आकाश से ओस, और भूमि की उत्तम से उत्तम उपज, और बहुत सा अनाज और नया दाखमधु दे।"** प्राचीन कनान में, वास्तव में, खेती बाड़ी सिंचाई द्वारा बिलकुल भी नहीं की जाती थी, जैसे के मिस्र में करने की प्रथा थी। अधिकतर उपज सुखी भूमि की खेती से आती थी, जो, प्रथम, बारिश पर निर्भर होती थी। परन्तु, बिन बारिश की गर्मियों में फसल के पकने की लिए, भूमध्य सागर से हवाओं के द्वारा लाई गई "ओस" भी आवश्यक होती थी। "भूमि की उत्तम से उत्तम उपज" का वर्णन सांकेतिक तरीके से फसल की भरपूरी को दर्शाता है, विशेषकर "बहुत सा अनाज और नया दाखमधु" जैसी प्रधान फसलों के लिए।

हालाँकि इसहाक और उसका घराना मुख्य रूप से चरवाहे और ग्वाले रहे थे, उन्होंने गरार के क्षेत्र में रहते हुए बुआई की थी और भरपूर फसल भी काटी थी (26:12-14)। याकूब के वंशज, इस्राएली, बाद में पड़े पैमाने पर खेती ड़ी करने वाले थे, जब उन्होंने कनान की भूमि पर अधिकार किया। विजय प्राप्त करने से पहले, प्रभु ने उनसे वादा किया की उस भूमि में भरपूर फसल पाएँगे यदि वे वाचा के प्रति विश्वसनीय रहते हैं तो (व्यव. 7:13; 11:14; 33:28)। इसहाक की आशीष की ही तरह, इन आशीषों में भी "ओस" "फसल" और "नए दाखमधु" शामिल थे।

आयत 29. कृषि संबंधी सफलता का वर्णन करने के बाद, इसहाक की आशीष, परमेश्वर की अब्राहम को दी आशीष के अनुक्रम में, आगे बढ़ती है, जिसमे अगला वर्णन "एक महान राष्ट्र" का है (12:2)। इसहाक ने संकेत दिया की याकूब के वंशजों की वृद्धि होगी और वे एक ऐसे स्थायी लोगों के रुप में बस जाएँगे जो अपने स्वयं के देश में रहेंगे और अपनी स्वयं की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक प्रणाली स्थापित करेंगे। वह आशीष खिंचकर दूर भविष्य तक पहुँचती है, यह पूर्वानुमान लगाते हुए की उसके पुत्र की भावी पीढ़ियां बहुगुणित होकर एक ऐसा शक्तिशाली राष्ट्र बन जाएंगी जो अपने राजनैतिक शत्रुओं को वश में कर लेगी। इसहाक ने इस सफलता का यह कहते हुए दर्शन किया, **"राज्य राज्य के लोग तेरे अधीन हों, और देश देश के लोग तुझे दंडवत करें।"**[5]

घर के पास, याकूब **अपने भाइयों का स्वामी** होगा; उसकी **माता के पुत्र** उसको दंडवत करेंगे (देखें 25:23)। उत्पत्ति की पुस्तक कोई संकेत नहीं देती की इसहाक और रिबका के, एसाव और याकूब के अतिरिक्त अन्य पुत्र थे, परन्तु "पुत्र" का प्रयोग प्रायः आने वाले वंशजों के लिए किया जाता था बजाय निकट संतान के। उदाहरण के लिए, यीशु को अब्राहम और दाऊद दोनों का "पुत्र" कहा जाना प्रायः (मत्ती 1:1) आने वाले वंशजों की समझ से किया गया है न कि निकट संतान के लिए। कुछ सन्दर्भों में, "भाई" का प्रयोग केवल "नातेदार" या "संबंधी" की ओर संकेत करता था (13:8; 16:12; 24:27; 25:18; 31:46)। महत्वपूर्ण विचार यह है की ऐसा करके इसहाक, बेईरादे से ही इसहाक और रिबका से उत्पन्न होने वाले गोत्र की अगुवाई याकूब को सौंप रहा था। हालाँकि

हमें कोई संकेत नहीं मिलता की एसाव और उसके पुत्रों ने सचमुच में कभी याकूब को दंडवत किया या उसकी सेवा की, पर उसके वंशज (एदोम के लोग) दाऊद के समय में याकूब के वंशजों (इस्राएलियों) के अधीन होंगे (2 शमूएल 8:14)।

इसहाक की याकूब को आशीष का अंतिम पहलु भी परमेश्वर द्वारा अब्राहम को दी प्रतिज्ञा का समानांतर है (12:3), केवल उसने क्रम को उलट दिया यह कहते हुए, **"जो तुझे शाप दें वे आप ही शापित हों, और जो तुझे आशीर्वाद दें वे आशीष पाएं।"** पाठ इस उलटे किए जाने का कोई कारण नहीं देता; परन्तु जब परमेश्वर ने याकूब के दादा को मेसोपोटामिया से बुलाया, तब उसका ज़ोर आशीष पर था न कि शाप पर। परमेश्वर की खुश ख़बरी अब्राहम के लिए यह थी की वह उसका विश्वास व्यक्तिगत रूप से अनुभव की जाने वाली आशीषों से चौड़ा करना चाहता था। सारांश में, प्रभु चाहता था की वह कुलपति अपने विश्वास की आँखों से उसे देखे जो वह भविष्य में उसके वंशजों द्वारा परिपूर्ण करना चाहता था जैसे उसने अपनी आशीष "पृथ्वी के सारे परिवारों" पर उंडेली (12:3)।

"शाप देना" शायद इसहाक के मन में इसलिए उभरा हुआ था क्योंकि पलिश्तियों के साथ उसका बुरा अनुभव रहा था। उन्होंने, एक तरह से, उसे शाप दिया था उसके कुछ कुएं चोरी करके और और कुछ को बंद करके (26:15-22)। इन विवादों के विचारों के कारण ही शायद उसने उस प्राथमिकता के क्रम को उलट दिया जो परमेश्वर ने मूल में घोषित की थी। एक चिंतित पिता के रूप में, उसने संभावित शापों को देखा होगा - धमकियाँ और विरोध - अपने पुत्र के प्रति, उस दैवी आशीष के पहले अपना स्थान लेते हुए। वह पहले से ही भरपूर पानी, उपजाऊ भूमि, और अनगिनत झुंडों और पशु समूहों के रूप में परमेश्वर की आशीषों का आनंद ले रहा था; और वह इसे अपने वंशजों की ओर भी बढ़ाना चाहता था।

अपने माँ की सहायता और आग्रह से, याकूब अपने भाई की आशीष चुराने में सफल हो गया। जबकि एसाव ने अपने जन्मसिद्ध अधिकार की बिक्री को लेकर अधिक मलाल नहीं दिखाया था, परन्तु आशीष कुछ ऐसा था जिसे वह आतुरता से चाहता था। अंत में, याकूब के छल के भयानक परिणाम निकले।

एसाव की आशीष, श्राप के समतुल्य (27:30-40)

30यह आशीर्वाद इसहाक याकूब को दे ही चुका और याकूब अपने पिता इसहाक के साम्हने से निकला ही था, कि एसाव अहेर ले कर आ पहुँचा। 31तब वह भी स्वादिष्ट भोजन बना कर अपने पिता के पास ले आया और उस से कहा, हे मेरे पिता, उठ कर अपने पुत्र के अहेर का मांस खा, ताकि मुझे जी से आशीर्वाद दे। 32उसके पिता इसहाक ने पूछा, तू कौन है? उसने कहा, मैं तेरा जेठा पुत्र एसाव हूँ। 33तब इसहाक ने अत्यन्त थरथर कांपते हुए कहा, फिर वह कौन था

जो अहेर करके मेरे पास ले आया था और मैं ने तेरे आने से पहिले सब में से कुछ कुछ खा लिया और उसको आशीर्वाद दिया? वरन उसको आशीष लगी भी रहेगी। 34अपने पिता की यह बात सुनते ही एसाव ने अत्यन्त ऊँचे और दु:ख भरे स्वर से चिल्लाकर अपने पिता से कहा, हे मेरे पिता, मुझ को भी आशीर्वाद दे। 35उसने कहा, तेरा भाई धूर्तता से आया और तेरे आशीर्वाद को लेके चला गया। 36उसने कहा, क्या उसका नाम याकूब यथार्थ नहीं रखा गया? उसने मुझे दो बार अड़ंगा मारा, मेरा पहिलौठे का अधिकार तो उसने ले ही लिया था और अब देख, उसने मेरा आशीर्वाद भी ले लिया है: फिर उसने कहा, क्या तू ने मेरे लिये भी कोई आशीर्वाद नहीं सोच रखा है? 37इसहाक ने एसाव को उत्तर देकर कहा, सुन, मैं ने उसको तेरा स्वामी ठहराया और उसके सब भाइयों को उसके आधीन कर दिया और अनाज और नया दाखमधु देकर उसको पुष्ट किया है सो अब, हे मेरे पुत्र, मैं तेरे लिये क्या करूं? 38एसाव ने अपने पिता से कहा हे मेरे पिता, क्या तेरे मन में एक ही आशीर्वाद है? हे मेरे पिता, मुझ को भी आशीर्वाद दे: यों कह कर एसाव फूट फूट के रोया। 39उसके पिता इसहाक ने उससे कहा, सुन, तेरा निवास उपजाऊ भूमि पर हो और ऊपर से आकाश की ओस उस पर पड़े॥ 40और तू अपनी तलवार के बल से जीवित रहे और अपने भाई के आधीन तो होए, पर जब तू स्वाधीन हो जाएगा, तब उसके जूए को अपने कन्धे पर से तोड़ फेंके।

आयत 30. इस घटना का समय, इस वृतांत के विषय वस्तु के प्रति महत्वपूर्ण है। जब **इसहाक याकूब को आशीर्वाद दे चुका और याकूब अपने पिता इसहाक के साम्हने से निकला ही था कि एसाव अहेर ले कर आ पहुँचा।** याकूब का अपने पिता के पास से फुर्ती से निकलना सांयोगिक जान पड़ता है और ऐसा करने से एसाव के हाथ से उसका प्राण भी बच जाता है (27:41)।

आयत 31. हालांकि अभी तक एसाव को यह नहीं पता था कि उसके अनुपस्थिति में क्या हुआ। इसलिए उसने इसहाक के स्वाद के अनुसार भोजन पकाया और उसे वह यह कहकर **अपने पिता के पास लाया** कि वह **उठकर उसके अहेर में से कुछ खाए** ताकि वह उसको **आशीष** दे।

आयत 32. इसहाक ने जो सुना उस पर उसको विश्वास नहीं हुआ। एसाव की बोली से दुविधा में पड़े इसहाक ने पूछा कि, **तू कौन है?** उसी तरह इसहाक के प्रश्न ने भी एसाव को हैरान कर दिया होगा। उसने तो वही किया जिसके बारे में उसके पिता ने उसे करने को कहा था; अब वह अहेर से लौटकर आया था और अपने अहेर में से उसने स्वादिष्ट भोजन पकाया था, लेकिन इसहाक अब उसका परिचय पूछ रहा था। क्रोधित होकर उसने कहा, **मैं तेरा जेठा पुत्र एसाव हूँ।**

आयत 33. यह सुनकर **इसहाक थरथर्राने लगा।** यहाँ प्रयोग की गई भाषा से यह पता चलता है कि वह घबराकर थरथर्राने लगा और अपने पर नियंतरण नहीं रख सका। वह यह जानना चाहता था कि **फिर वह कौन था जो अहेर करके मेरे पास ले आया था और मैं ने तेरे आने से पहिले सब में से कुछ कुछ खा लिया और उसको आशीर्वाद दिया?** बूढ़ा कुलपति खो सा गया कि अब उसे क्या करना

चाहिए, क्योंकि उसने तो किसी और को आशीष दे दी है। वह जानता था कि प्राचीन दक्षिण पूर्व की प्रथा के अनुसार, जो आशीर्वाद एक बार दी जाती थी वह वापस लौटकर नहीं आती है, चाहे वह आशीर्वाद धोखे से ही क्यों न प्राप्त की गई हो। फिर क्योंकि इसहाक ने "यहोवा की उपस्थिति" में उसे आशीष दी थी तो स्पष्ट रूप से उसने यह सोचा होगा कि यदि वह इसे वापस ले लेता है तो वह परमेश्वर की ओर से श्रापित ठहरेगा (27:7)। **इसलिए उसने कहा, उसको आशीष लगी भी रहेगी।**

आयत 34. एसाव की पीड़ा **इसहाक की पीड़ा** से मिलती जुलती थी। जेठा पुत्र ने **अत्यन्त ऊँचे और दुःख भरे स्वर से चिल्लाकर अपने पिता से कहा, हे मेरे पिता, मुझ को भी आशीर्वाद दे!** वह आशा के विपरीत आशा लिए हुए था कि इसहाक, याकूब को दिए आशीर्वाद बदलेगा और वह उसको आशीष देगा। वर्षों पूर्व एसाव ने अपने पहलौठे के अधिकार (अपने पिता के दुगुने आशीष) को तुछ जाना था। इसी अपमान से जुड़ी एक और कड़ी यह है कि उसने अपने पिता के आशीष को खो दिया था। वह दुःख भरे स्वर में गिड़गिड़ाकर रोया कि उसका पिता का मन बदल जाए (इब्रा. 12:16, 17)।

आयत 35. इसहाक का प्रत्युत्तर, उसी के एक प्रश्न का उत्तर था, "तब वह कौन था?" (27:33)। उसने बताया कि उसने एसाव को आशीष क्यों दी। इसहाक ने अपने शक तभी प्रकट किया था जब पहला व्यक्ति एसाव बनकर उससे मिलने आया था; परंतु अब निश्चित जान गया था कि क्या हुआ हैः **तेरा भाई धूर्तता से आया, और तेरे आशीर्वाद को लेके चला गया।** इब्रानी शब्द מִרְמָה *(मिर्माह)* जिसका अर्थ "धोखा" है यह दर्शाता है कि याकूब ने जानबूझकर अपने पिता को धोखा दिया था।

आयत 36. एसाव ने उत्तर दिया, **क्या उसका नाम याकूब यथार्थ नहीं रखा गया? उसने मुझे दो बार अड़ंगा मारा।** "अड़ंगा मारना" עָקַב *(आकाव)* 27:35 से भिन्न है और याकूब के नाम के साथ शब्दों का खेल है (देखें 25:26; यिर्म. 9:4; होशे 12:3)। एसाव ने एक कटोरा दाल के लिए अपनी गलती न मानते हुए सच्चाई बढ़ा चढ़ा कर बोलकर यह दावा किया कि उसके भाई ने उससे उसके **पहलौठे का अधिकार छीन लिया है** (25:29-34)। याकूब ने उस समय अपने भाई के भूखे होने का लाभ उठाया और उसने अपने दाल के लिए उच्च मूल्य मांगा लेकिन किसी ने भी इस सौदा को उसे स्वीकार कराने के लिए उस पर दबाव नहीं डाला था। वर्तमान परिस्थिति पहले से भिन्न थी क्योंकि अब याकूब ने अपने भाई की आशीष, जिसे इसहाक ने अपने ज्येष्ठ पुत्र को देने के लिए ठानी थी, स्वंय प्राप्त करने के लिए धोखाधड़ी किया। इस स्थिति में एसाव का आरोप कि **उसने मेरा आशीर्वाद भी ले लिया है** में सच्चाई है। वह अपने पिता से हृदय विदारक स्वर में चिल्लायाः **क्या तू ने मेरे लिये भी कोई आशीर्वाद नहीं सोच रखा है?** एसाव यह विनती कर रहा था कि उसका पिता केवल इतना ही कहे कि वह उससे प्रेम करता है और यदि ऐसा है तो उसको भी कुछ आशीष मिल सकती थी।

आयत 37. इसहाक के उत्तर ने **एसाव** को थोड़ा धीरज बंधाया। वास्तव में

उसने छोटे भाई को दी आशीष का अनुमोदन किया (27:27-29)। उसने उस गोत्र को संभालने की कमान याकूब को दे दिया था जो अब एसाव का स्वामी हो गया था। वस्तुतः एसाव के सभी **सगे संबंधी** याकूब के **दास** हो गए थे और याकूब को परमेश्वर की ओर से भरपूर **अनाज और नया दाखमधु** मिलने वाला था। इसलिए, वृद्ध पिता ने एसाव से पूछा कि वह अपने ज्येष्ठ **पुत्र** के लिए क्या **कर सकता है**। इसहाक ने जो आशीष याकूब को दी थी वह पूर्ण तथा विस्तृत था और अब एसाव को देने के लिए उसके पास कुछ भी नहीं बचा था।

आयत 38. इसहाक का प्रत्युत्तर एसाव के प्रति अति दयनीय था। एसाव ने सोचा कि उसके पिता के पास **एक** से अधिक **आशीष** देने के लिए होगी। उसने अनुनय विनय किया, **हे मेरे पिता, मुझ को भी आशीर्वाद दे**। इन शब्दों के साथ उसका निवेदन समाप्त हुआ; और वह ज़ोर-ज़ोर से फूट फूटकर रोने लगा।

आयतें 39, 40. इसहाक ने एसाव को जो आशीष दी वह वास्तव में आशीष नहीं थी या यों कहें कि वह श्राप था; क्योंकि यह उसके विपरीत था जो उसने याकूब को दिया था। "आकाश की ओस," "भूमि की उत्तम से उत्तम उपज," "बहुत से अनाज और दाखमधु" (27:28) के बजाय **उपजाऊ भूमि** और **आकाश की ओस** से दूर एदोम में वह वास करेगा (25:30; 36:8, 43)। वह अपने **तलवार के बल** क्रूर पहाड़ों तथा मरुस्थल के बीच वास करेगा। वह आक्रमण और युद्ध करके, जो अपनी रक्षा नहीं कर सकते उनको लूटकर, परभक्षी के समान जीएगा। यह इश्माएल की स्थिति के विश्लेषण जैसा ही है जो "एक बनैले गधे" के समान है, जिसका "हाथ सबके विरूद्ध" और "सबका हाथ उसके विरूद्ध" उठेगा (16:12)। इन जुड़वों के पैदा होने के पूर्व, इनके बारे में रिबका को जो भविष्यवाणी दी गई थी वह इसी परिस्थिति के समकक्ष थी कि छोटा भाई बड़े से बलशाली होगा; एसाव के लोग उनकी सेवा करेंगे (25:23; 2 शमूएल 8:14)। फिर भी, याकूब का वंश (इस्राएल), एसाव के वंश (एदोमी) पर सदाकाल तक प्रभुता नहीं कर सकेंगेः **पर जब तू स्वाधीन हो जाएगा, तब उसके जूए को अपने कन्धे पर से तोड़ फेंकेगा।** सदियों बाद, योराम राजा के विरूद्ध बलवा करके उन्हें यहूदा से स्वतंत्रता मिलेगी[6] (2 राजा 8:20-22)।

एसाव का याकूब की हत्या करने का षडयंत्र (27:41-45)

[41]एसाव ने तो याकूब से अपने पिता के दिए हुए आशीर्वाद के कारण बैर रखा; सो उसने सोचा, कि मेरे पिता के अन्तकाल का दिन निकट है, फिर मैं अपने भाई याकूब को घात करूंगा। [42]जब रिबका को अपने पहिलौठे पुत्र एसाव की ये बातें बताई गईं, तब उसने अपने लहुरे पुत्र याकूब को बुला कर कहा, सुन, तेरा भाई एसाव तुझे घात करने के लिये अपने मन को धीरज दे रहा है। [43]सो अब, हे मेरे पुत्र, मेरी सुन और हारान को मेरे भाई लाबान के पास भाग जा; [44]और थोड़े दिन तक, अर्थात जब तक तेरे भाई का क्रोध न उतरे तब तक उसी के पास रहना। [45]फिर जब तेरे भाई का क्रोध तुझ पर से उतरे और जो काम तू ने

उस से किया है उसको वह भूल जाए; तब मैं तुझे वहां से बुलवा भेजूंगी :ऐसा क्यों हो कि एक ही दिन में मुझे तुम दोनों से रहित होना पड़े?

आयत 41. क्योंकि **याकूब** ने धोखे से **अपने पिता** से अपने बड़े भाई की **आशीष** को उसके वृद्धावस्था में उसके मृत्यु शैया पर ले लिया था तो **एसाव** ने अपने छोटे भाई के प्रति **बैर रखा** और उसकी हत्या करने की योजना बनाई (देखें 4:5, 8, 23)। "बैर रखा" के लिए שָׂטַם *(सातम)* क्रिया प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ "किसी के विरूद्ध शत्रुता"[7] रखना होता है। यह लगातार लंबे अवधि तक रहने वाला क्रोध भी दर्शाता है। एसाव ने ईर्ष्या अपने हृदय में पनपाया रखा और यह ठाना कि ज्यों ही उसके **पिता** का देहांत होगा और उसके मृत्यु के विलाप का दिन समाप्त होता तो वह याकूब का हत्या करेगा।

आयत 42. संभवतः हत्या की इस योजना को अपने हृदय में छिपाए रखने के बजाय उसने यह अपने मित्रों के साथ साझा किया होगा, क्योंकि एसाव की इस योजना को **रिबका को बताया गया**। उसने **याकूब को बुलाया** और उसे चेतावनी दी कि एसाव बदले की भावना लिए हुए उसकी हत्या करने की अपने मन में धैर्य धर रहा है। उसने याकूब को यह नहीं बताया कि एसाव, इसहाक के मृत्यु के बाद हत्या की योजना को अंजाम देने वाला है।

आयत 43. जैसे पहले भी बताया जा चुका है कि रिबका, इसहाक से अलग स्वभाव की थी; वह हिचकिचाती नहीं थी न ही और न ही वह नकारात्मक विचार रखती थी। इसके विपरीत, वह कार्य करने में मज़बूत व्यक्तित्व थी। जब उसका सामना अवसर या समस्या से होता था तो वह अविलंब उस पर योजना बनाती थी और उसको कार्य में लाती थी (24:15-28, 58-61; 27:5-17)। इस अवसर पर, उसने अपने मातृत्व का सबसे मज़बूत उच्चारण किया और याकूब को यह कहकर आदेश दिया, **सो अब, हे मेरे पुत्र, मेरी सुन और हारान को मेरे भाई लाबान के पास भाग जा!** रिबका उसको अपने संबंधियों के पास भेजती है जहाँ उसका पालन पोषण किया गया था (11:29, 31; 24:24, 29; 28:2, 5)।

आयतें 44, 45. जब रिबका ने याकूब को कहा, **थोड़े दिन तक अर्थात जब तक तेरे भाई का क्रोध न उतरे तब तक उसी के पास रहना**, तो या तो वह अपने पुत्र के प्रति ईमानदार नहीं है या फिर वह इस तथ्य को नजरअंदाज कर रही थी कि कब तक उसे अपने घर से दूर रहना पड़ेगा। वह याकूब के सुरक्षा को लेकर अत्यंत भयभीत हो रही थी तो उसने उसे यही सलाह दी कि जब तक एसाव का क्रोध शांत नहीं हो जाता है और वह उसके विरूद्ध किए गए अपराध भूल नहीं जाता है तब तक वह लाबान के संग ही रहे। जब एसाव का दृष्टिकोण याकूब के प्रति बदल जाएगा तो वह उसे बुलवा लेगी।

उसके वक्तव्य पर यदि ध्यान दिया जाए तो रिबका के वास्तविक भय का पता चलता है कि वह सोचती है कि कहीं वह **एक ही दिन में** अपने **दोनों पुत्रों को** न खो दे। उसका वक्तव्य यह दर्शाता है कि वह यह समझती है कि यदि एसाव ने याकूब की हत्या की तो उसको मृत्युदण्ड दिया जाएगा (देखें 9:5, 6)। सत्य तो

यह है कि वह एक ही दिन में अपने दोनों पुत्रों को खो सकती थी। न तो याकूब और न ही उसकी माँ को ही इस बात का संज्ञान था कि उनके कुछ दिन, कठिन परिश्रम तथा संघर्ष का परिणामस्वरूप याकूब को हारान में बीस वर्ष तक लंबी अवधि बिताकर चुकाना पड़ेगा (31:41)। रिबका की यह इच्छा कि वह अपने प्रिय पुत्र से फिर मिलेगी कभी सफल नहीं हुई। जहाँ तक हमें मालूम है, यह आखिरी बार था जब उन्होंने एक दूसरे को देखा था।

रिबका की शिकायत (27:46)

46फिर रिबका ने इसहाक से कहा, हित्ती लड़कियों के कारण मैं अपने प्राण से घिन करती हूँ; सो यदि ऐसी हित्ती लड़कियों में से, जैसी इस देश की लड़कियां हैं, याकूब भी एक को कहीं ब्याह ले, तो मेरे जीवन में क्या लाभ होगा?

आयत 46. एक बार फिर **रिबका** ने याकूब को सम्मानजनक तरीके से हारान भेजने की योजना बनाई। उसने एसाव का उसके भाई के प्रति धमकी का भी वर्णन नहीं किया। वह संभवतः इस घटना के कारण इसहाक के साथ अपने व्यक्तिगत् संबंधों और याकूब का अपने पिता को धोखा देने में उसकी भूमिका को लेकर भी व्यथित थी। इसके लिए, रिबका ने एसाव के हित्ती पत्नियों को ज़िम्मेदार ठहराया (26:34; देखें 23:10)। उसने समझा कि यदि याकूब भी उस देश के कनानी स्त्रियों को ब्याह ले तो जीवन जीने योग्य नहीं रह जाएगी। यह इसहाक के लिए उसके पिता अब्राहम के विचारों का संस्मरण है कि वह किस प्रकार उसके पुत्र का स्थानीय लड़कियों से विवाह करने के विरूद्ध था। इसी कारण, अब्राहम ने अपने दास को हारान भेजा ताकि वह उसके पुत्र के लिए उसी के लोगों में से पत्नी लाए (24:1-67)। रिबका यह भी समर्थन कर रही थी कि वह भी याकूब के लिए ऐसा ही करे ताकि वह भी अपने दूर के संबंधियों के मध्य जाकर अपने लिए पत्नी ढूँढे (जो उसे खून का भूत सवार अपने भाई से भी दूर रहेगा)।

अनुप्रयोग

धोखा देने का नाटक (अध्याय 27)

दृश्य 1: परमेश्वर के लोग परमेश्वर के योजना को अपने जीवन से हटाकर अपने लिए स्वंय मानदण्ड तय करते हैं तो वे अपने लिए मुसीबत खड़े करते हैं। इस नाटक का प्रथम दृश्य तनाव का मंच, बुरा दृष्टिकोण और विनाशक कार्य इत्यादि तैयार करता है जो अध्याय 27 के बाकि हिस्सों को अपने नियंत्रण में रखता है। इसहाक ने अपने वृद्धावस्था में सोचा कि वह अपने मृत्युशैया में अपने ज्येष्ठ पुत्र एसाव को आशीष देगा (27:1-4)। उसने ऐसा करने के लिए ठान भी लिया था जबकि रिबका को यह भविष्यवाणी उसके गर्भ काल के कठिन समय में

मिली था "... कि ज्येष्ठ, छोटे भाई के आधीन रहेगा" (25:23)।

इसहाक दृष्टिहीन था और उसकी दृष्टिहीनता का लाभ रिबका ने याकूब के द्वारा उसको धोखा देकर उठाया। चूँकि इसहाक ने यह सोचा कि उसकी मृत्यु निकट है तो उसने अपने घर की व्यवस्था ठीक करने का विचार किया। परंतु, मृत्यु शैया पर अपने ज्येष्ठ पुत्र को आशीष देने का उसका विचार उचित नहीं था। एसाव आत्मिक विचारों वाला व्यक्ति नहीं था। बल्कि वह तो शारीरिक मनुष्य था; वह अपने शरीर की इच्छा पूर्ति और घमण्ड भरा जीवन के लिए ही जी रहा था (देखें 1 यूहन्ना 2:16)। इब्रानियों के पत्री के लेखक ने उसे "अनैतिक"[8] एंव "भक्तिहीन" व्यक्ति बताया (इब्रा. 12:16)। वह ऐसा अगुआ नहीं था जो लोगों के सम्मुख परमेश्वर के वाचा का पालन करने का आदर्श बन सके। इसका तात्पर्य यह भी नहीं हुआ कि याकूब अपने जवानी के दिनों में बिल्कुल पाप रहित था; वास्तव में वह ऐसा नहीं था, परंतु उसमें आत्मिक अगुवेपन की क्षमता थी। याकूब के बारे में परमेश्वर यह बात जानता था और इसहाक को भी इसकी पहचान कर लेनी चाहिए थी।

एसाव सब कुछ कर सकता था जबकि उसका पिता उसके समान नहीं थाः वह जंगल में अहेर करने और स्वादिष्ट भोजन पकाने में पारंगत था जिसको इसहाक भी पसंद करता था (25:27, 28)। इसहाक ने एसाव के अहेर को अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करने दिया। क्योंकि इसहाक अपने एक पुत्र के अहेर को अधिक चाहता था, तो उसने एसाव को यह अनुमति दी कि जंगल में जाकर अहेर करे और उसको आशीष देने से पूर्व वह स्वादिष्ट भोजन तैयार करवाये।

पाठः इसहाक का अनुभव सभी युगों के परमेश्वर के लोगों के लिए एक चेतावनी बनी कि हम अपने ज्ञानेन्द्रियों को भोजन (27:4, 9, 25), स्पर्श (27:21), श्रवण (27:22), या सूंघने (27:27) को नियंत्रण में रखें। जो हमें अच्छा दिखता है वह संभवत: हमारे ले अच्छा न हो; और यह आवश्यक नहीं है कि जो हम अनुभव कर रहे हैं वही परमेश्वर की ओर से हमारे लिए इच्छा हो। अर्नेस्ट हेमिंगवे के उपन्यास *डेथ इन दि आफ़्टरनून* में एक पात्र ने लेखक की मान्यता को व्यक्त किया होगा जब उसने कहा, "मैं जानता हूँ कि केवल वही बात जो आपको अच्छा अनुभव कराते हैं, ही नैतिक है और जब बुरा अनुभव करते हैं तो वे अनैतिक हैं।"[9] बहुत से लोग इस सिद्धांत को अपने जीवन में लागू करते हैं और वे बहुत से महत्वपूर्ण निर्णय अपने भावनाओं के आधार पर लेते हैं। 1970 के दशक के एक बहुप्रचलित गाना कहता है, "जो अच्छा लगता है वह अनुचित नहीं हो सकता है।"[10] कई व्यक्ति इस प्रकार के विचारों से धोखा पाते हैं, जिस प्रकार वर्षों पूर्व इसहाक ने भी ऐसा ही किया था।

दृश्य 2: परमेश्वर के लोगों को धोखा और मिलावटी कार्य नहीं करना चाहिए, यहाँ तक उन्हें यह भी आश्वासन देने का प्रयास नहीं करना चाहिए कि परमेश्वर संसार को आशीष दे चुका है। एक दुःख भरी तथा कभी कभी दुःखद परिस्थिति तब हो जाती है जब पति और पत्नी ईमानदारी से संवाद नहीं करते हैं। इस प्रकार का दृश्य इसहाक और रिबका के परिस्थितियों में उनके अंतिम

दिनों की अवस्था में दिखाई देता है। कुलपतियों के दिनों में पुरुष का शब्द ही अंतिम शब्द तथा वह अटल होता था। इस दृश्य में जब रिबका ने सुना कि इसहाक, एसाव को मृत्यु शैया से आशीर्वाद देने पर है तो वह उलझन में फंस गई। उसने सोचा कि इस विषय पर अपने पति से वार्तालाप करना व्यर्थ है क्योंकि उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र, उसके प्रिय पुत्र को आशीष देने की ठानी थी। इसके साथ ही रिबका ने सोचा होगा कि इसहाक को याकूब से आशीष देने के लिए विवश करने के लिए वह उसको दोषी ठहरा सकता है क्योंकि वह उसका (रिबका) प्रिय था। अतः यही कारण रहा होगा जब उसने अपने पति को धोखा देने की योजना बनाई होगी लेकिन परमेश्वर ने वर्षों पूर्व यह कह दिया था कि एसाव अपने छोटे भाई याकूब की सेवा करेगा (25:23)। यदि हम रिबका के विचारों को उचित ठहराएं तो हम यह पाएंगे कि परमेश्वर की ओर से इसहाक का याकूब को आशीष देने की योजना प्राथमिक है।

रिबका का इरादा कुछ भी क्यों न हो, हमें इससे सावधान रहने की आवश्यकता है कि हम उसके कार्यों को उचित न ठहराएं। परमेश्वर धोखा धड़ी और छल स्वीकृत नहीं करता है चाहे उसके अंत में भला ही क्यों न हो (रोमियों 3:8)। हाँ, रिबका ने अपने कार्यों/योजना का तर्क दिया होगा, लेकिन वे तो अनुचित तथा संपूर्ण परिवार को नाश करने वाला था। परिणाम से बेखबर, उसने याकूब को अपनी योजना के पूर्ति के लिए चुना। सबसे पहले तो उसने दो बकरियों को मरवाकर उनको पकाया और उन्हें ऐसा तैयार किया कि इसहाक को धोखा दिया जा सके कि वह अपने ज्येष्ठ पुत्र के अहेर के जैसा ही भोजन तैयार करे ताकि वह उसे खा कर उसको आशीष दे। तब उसने अपने छोटे पुत्र को एसाव के वस्त्र पहनाए और उसने उसके हाथ और गर्दन को बकरी के खाल से ढांका ताकि वह अपने दृष्टिहीन पति इसहाक को धोखा दे सके। उसके योजना में संसार की चतुराई दिखाई देती है न कि उस बुद्धि से जो ऊपर से आती है (याकूब 3:13-18)। रिबका की छलपूर्ण योजना श्रीमान वाल्टर स्कॉट की एक बहुप्रचलित कहावत से संस्मरण होता है, "ओह, हम पहले धोखा देकर कैसे उलझाने वाले जाल को बुनते हैं।"[11]

पाठः परमेश्वर अपने उद्देश्य के पूर्ति के लिए अच्छे तथा बुरे दोनों का उपयोग कर सकता है (रोमियों 8:28), लेकिन परमेश्वर को उसके इस उद्देश्यय की पूर्ति के लिए कुछ भी, अर्थात मनुष्य द्वारा पापमय या दुःख भरा कार्य करके उसकी सहायता करने का बहाना नहीं होना चाहिए। सच्चे विश्वास का तात्पर्य छल, कपट और धोखा दिए बिना जीवन जीने से है। इसमें परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी रहने की ज़रूरत है, इससे फ़र्क नहीं पड़ता कि हम कैसा महसूस करते हैं या यह सोचते हैं कि क्या होगा। रिबका की समस्या यह थी कि उसने परमेश्वर पर उसके योजना की पूर्ति के लिए भरोसा नहीं रखा; वह धोखा देने का षडयंत्र रचकर परमेश्वर की सहायता करना चाहती थी।

एक विश्वासी के जीवन में धोखाधड़ी करने का कोई स्थान नहीं है। शैतान संपूर्ण जगत को भरमानेवाला वाला है (प्रका. 12:9) और वह लोगों को आरंभ से

ही झूठ और धोखाधड़ी से भरमाता आया है (3:1-13)। यीशु सत्य है (यूहन्ना 14:6; देखें 8:32, 36) और उसमें कोई झूठ नहीं पाया जाता है। "क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले और जिसकी आत्मा में कपट न हो" (भजन 32:2)।

दृश्य 3: परमेश्वर के लोग धोखा करके सफलता प्राप्त तो कर लेते हैं लेकिन उनको उसकी भारी कीमत भी चुकानी पड़ती है। अगले दृश्य में याकूब अपनी माता रिबका से इस बात पर सहमत हो जाता है कि वे मिलकर ऐसा काम करेंगे कि इसहाक एसाव को मृत्युशैया की आशीष न दे पाए। वह यह जानता था कि उसके बूढ़े और दृष्टीहीन पिता को धोखा देना उचित नहीं है फिर भी वह नैतिक पतन के कारण ऐसा करने से नहीं रूका। उसकी एक ही चिंता थी कि कहीं इसहाक को इसका पता न चल जाए और कहीं वह आशीष के बजाय श्राप का भागीदार न बन जाए (27:12)।

इसकी हमें पहले ही एक झलक दी गई है कि किस प्रकार याकूब ने अपनी महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए एसाव की भूख को मिटाने के लिए उसने उसके पहलौठे का अधिकार एक कटोरे दाल की कीमत के बदले उससे ले लिया था (25:29-34)। उसकी महत्वकांक्षा एक बार फिर से जाग उठी जब उसकी माता ने उसे एसाव की आशीष को अपने पिता से धोखे से लेने के लिए उत्साहित किया। जीवन में महत्वकांक्षा रखना अच्छी बात है; एक व्यक्ति कठिन परिश्रम करके जब सफलता प्राप्त करता है तो वह उसके परिवार तथा समाज के लिए अच्छा होता है। फिर, जब एक महत्वकांक्षी व्यक्ति सफलता प्राप्त करने के लिए लघु मार्ग अपनाता है तो उसके सम्मुख असंवैधानिक साधन अपनाने का परीक्षा बना रहता है। यही याकूब की समस्या थी।

धोखे का "उलझाने वाली जाल" तभी बिछ गया था जब याकूब ने माँ की योजना में कार्य करने की सहमति प्रगट की थी। ज्यों ही उसने एसाव का वस्त्र पहनकर स्वादिष्ट भोजन के साथ कक्ष में प्रवेश किया, तो एक के बाद एक झूठ की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। जैसे ही याकूब ने धोखे धड़ी का जाल बुनना प्रारंभ किया, धोखे ने और धोखे की मांग की। सर्वप्रथम उसने अपने नाम के बारे में झूठ बोला कि वह एसाव है। इस झूठ ने उसे अगले झूठ की ओर कदम रखने के लिए उत्साहित किया कि वह इसहाक का पहलौठा है। उसके बाद उसने यह दावा किया कि बकरी का मांस उसके अहेर का मांस है और इस पर उसने झूठ बोलकर ईश्वर की निंदा की कि परमेश्वर ने उसके अहेर में सहायता की। जब याकूब की आवाज ने इसहाक को असमंजस में डाला तो उसने अपने पिता को बकरी की खाल लपेटे हाथों को छुआ कर उसे यह कहकर धोखा दिया कि वह उसका पहलौठा है। अंत में, स्वादिष्ट भोजन खाने के बाद, इसहाक ने अपने पुत्र को कहा कि वह नज़दीक आकर उसको चूमे; जब याकूब ने ऐसा किया तो इसहाक ने उसके वस्त्रों को सूंघा और उसने यह स्वीकारा कि वह वास्तव में एसाव ही है और तब उसने उसे अपनी मृत्युशैया से आशीर्वाद दिया।

पाठः जब याकूब ने धोखा देने का कार्य प्रारंभ किया तो उसे इसके परिणाम

का बिल्कुल अनुमान नहीं था। उसे उसके परिवार का उससे दूर रहने का दर्द, अलगाव और अकेलेपन के अनुभव का ज्ञान नहीं था। निश्चय ही, उसने यह अनुमान नहीं लगाया था कि उसकी मृत्यु एसाव के हाथों भी हो सकती है। क्योंकि रिबका ने उसे यह आश्वासन दिया था कि उसे हारान में कुछ ही दिन रहना होगा (27:44) तो उसने यह अनुमान नहीं लगाया होगा कि उसे हारान में बीस वर्षों तक रहना होगा और उसे अपनी माँ को दोबारा देखने का अवसर कभी प्राप्त नहीं होगा। यही है जो पाप को अधिक धोखेबाज़ और धूर्त बना देती हैः यह तत्काल संतुष्टि (3:6; 1 यूहन्ना 2:15-17), आनंद (इब्रा. 11:25) या सफलता (11:4) प्रदान करने का लालच देता है; लेकिन यह अपने में उस दोषाग्नि, स्वाभिमान की हानि, और दुःख को छिपा लेता है जो उस पर, परिवार और मित्रों पर आएगा (27:30-40; 2 शमूएल 12:9-14; भजन 32:3, 4; 51:1-19; मत्ती 26:47-50; 27:3-5)।

दृश्य 4: परमेश्वर विश्वासियों के जीवन में पापों के कारण, खतरों एंव मुसीबतों के बावजूद आशीष ला सकता है। इस कहानी के सभी पात्र पापी हैं और कहीं न कहीं वे असफल रहे हैं। परमेश्वर का दूरदर्शी हाथ ने ही एसाव और याकूब को उस समय अलग अलग रखा होगा जब इसहाक याकूब को आशीर्वाद दे रहा था। ऐसा लगता है कि परमेश्वर ने न केवल छोटे पुत्र को मृत्यु से बचाया और परिवार को बिखरने से बचाया बल्कि उसने यह आशा भी बनाए रखी कि अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा अभी भी जीवित है और वह परमेश्वर के समय के अनुसार अपने तरीके से पूरी होगी।

अंतिम दृश्य में, एसाव, इसहाक के तंबू में प्रवेश करता है। उन्होंने रिबका और याकूब द्वारा अपने विरुद्ध किए गए षडयंत्र और धोखे का अलग-अलग तरह से प्रत्युत्तर दिया (27:30-34)। इसहाक को जैसे ही यह पता चला कि उसके छोटे पुत्र ने उसकी मृत्यु शैया का आशीर्वाद जो उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र के लिए सोच रखी थी, प्राप्त करने के लिए उसको धोखा दिया है तो वह "थर्र थर्र कांपने लगा।" वह यह जानता था कि जो आशीर्वाद परमेश्वर के सम्मुख दिया गया है उसे वापस नहीं लिया जा सकता था (27:33)।

आशा के विपरीत आशा लिए हुए, एसाव संभवतः यह सोचकर कि इसहाक उन आशीषों को याकूब से वापस लेकर उसे देगा, "ज़ोर-ज़ोर से ऊँचे और दुःखभरे स्वर में रोने लगा" (27:34)। यहाँ उसके घमण्ड को ज़बरदस्त झटका लगा। वर्षों पहले, उसने मूर्खता पूर्वक अपने उत्तराधिकार के दोहरे भाग को एक कटोरे दाल के लिए अपने भाई को बेच दिया था; और अब याकूब ने उस समय का उनके परिवार और उनके आने वाले भावी पीढ़ी के अगुवेपन और अधिकार की आशीष ले ली थी। एसाव फूट फूटकर रोया कि उसके पिता का मन बदल जाए।

इब्रानियों के पत्री के लेखक ने इस हृदयस्पर्शी दृश्य पर रोशनी डाली हैः इसके साथ ही कि एसाव ने "एक बार के भोजन के बदले अपने पहिलौठे होने का पद बेच डाला" उसने यह भी लिखा कि "बाद में जब उस ने आशीष पानी चाही, तो अयोग्य गिना गया और आँसू बहा बहाकर खोजने पर भी मन फिराव का

अवसर उसे न मिला" (इब्रा. 12:16, 17)। कुछ विश्लेषकों का यह भी मानना है कि एसाव ने पश्चाताप नहीं किया क्योंकि वह चुने हुओं में से नहीं था और इसीलिए पश्चाताप करना उसके लिए संभव नहीं था। परंतु यह अनुवाद ठीक नहीं हो सकता है। नये नियम में पश्चाताप (μετάνοια, *मेटानोइया)* शब्द का प्राथमिक अर्थ "मन/हृदय बदलना" है, जिसका परिणाम "एक नया धार्मिक तथा नैतिक जीवन" के रूप में होता है।[12] इस प्रकार का परिवर्तन इस पाठ का संदर्भ नहीं है। एसाव को अपने पाप के प्रति कोई पछतावा नहीं था जिसके कारण वह उससे पछताकर परमेश्वर के पास नहीं लौटा। एसाव ने बहुत विनती एंव रोकर अपने पिता के मन को बदलना चाहा और उसने जो मृत्यु शैया पर उसके भाई को आशीर्वाद दिया था उसे वापस लेने की विनती करता रहा।

पाठः कुछ लोग यह सोचते होंगे कि क्या परमेश्वर ने रिबका द्वारा अपने दृष्टिहीन पति को धोखा देने की योजना पर आशीष देकर अन्याय किया। परमेश्वर याकूब को, जो धोखा देने वाला है, जिसने अपने परिवार एंव अपने कुलों का अगुवापन का अधिकार झूठ तथा धोखे से प्राप्त किया, कैसे आशीष दे सकता है? ऐसा जान पड़ता है कि एसाव की तरह वह भी इस अधिकार का हकदार नहीं था।

परमेश्वर ने इस वृतांत में संलिप्त धोखा और इसमें शामिल व्यक्तियों को उनके कार्यों के लिए क्षमा नहीं किया और इसका परिणाम यही सिखाता है कि अंतिम परिणाम परमेश्वर की दृष्टि में न्यायोचित है। आलोचकों को परमेश्वर के प्रति कुछ भी कहने से पूर्व यह स्मरण रखना चाहिए कि यहोवा के पास एक योजना है जिसको वह इतिहास के द्वारा क्रियांवित कर रहा है - एक ऐसी योजना जो यीशु मसीह, उद्धारकर्ता और प्रभु को अंततः इस धरती पर लाई। जबकि प्रभु की योजना परत दर परत खुल रही थी तो उसको अब्राहम, इसहाक और याकूब जैसे पापी और अयोग्य व्यक्तियों के साथ कार्य करना था, उनको उपयोग करना था और उनको आशीष देना था क्योंकि इनके समान अन्य और कोई व्यक्ति तब उपलब्ध नहीं थे। हर एक व्यक्ति - जैसे कि अब है - को यह मालूम होना चाहिए कि परमेश्वर इस संसार में "सभी हिसाब किताब नहीं चुकाता है।" क्योंकि "पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है" (रोमियों 6:23), तो याकूब को, एक पापी होने के नाते, मृत्यु मिलनी चाहिए थी। फिर भी, कुलपति को दण्ड के बजाय (जैसे कि हम सब उसके योग्य हैं), परमेश्वर ने अपने अनुग्रह के द्वारा उसको जीने दिया।

उपसंहारः ऐसा लगता है कि याकूब बिना दण्ड भोगे और जो झूठ उसने अपने बूढ़े बाप से बोला, उसका परिणाम भुगते बिना बच गया। लेकिन ऐसा नहीं है। जैसे कहानी आगे बढ़ती है, तो इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उसको दर्दनाक अनुभव के द्वारा यह पता लगाना था कि "धोखेबाज़ों का मार्ग" आसान नहीं होता है (नीति. 13:15)। आगे के कुछ अध्यायों से यह स्पष्ट है कि याकूब को दूसरों को धोखा देने के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण पाठ सीखना था। वह उनको तभी समझ पाएगा जब वह स्वंय उनके समान धोखाधड़ी का शिकार होगा। याकूब को

यह पता चलेगा कि लाबान, उसका होने वाला ससुर, जवान भांजे से भी अधिक धोखा देने वाला है। किसी ने ठीक ही अवलोकन किया है कि "यह दोनों ही एक दूसरे के लायक थे।"

समाप्ति नोट्स

[1]ब्रूस के. वोल्टके, *जेनेसिस: अ कोमेंटरी* (ग्रैंड रैपिड्स, मीच.: जोंडरवेन पब्लिशर्स, 2001), 376. [2]दोहराए जाने के द्वारा, वाचन इस बात पर ज़ोर देता है की इसहाक को जंगली जानवरों के मांस से बना स्वादिष्ट भोजन खाना बहुत पसंद था (27:4, 7, 9, 14, 17, 19, 25, 31)। [3]जैसे समय बीता, याकूब (इस्राएल) के वंशज बारह गोत्रों में फ़ैल गए। दैवी रूप से नियुक्त अगुवों, जैसे की मूसा और यहोशू ने अपनी मृत्यु से पूर्व विदाई की आशिषें दी और/या प्रभार सौंपा गोत्रों के प्रमुखों को, जिनमे प्राचीन और लोगों के अधिकारी भी शामिल थे। (व्यव. 33:1-29; यहोशू 23:1-16; 24:1-28)। [4]उत्पत्ति 49:3-12 के अनुसार, याकूब ने रुबेन, शिमोन और लेवी को लांघकर, अपनी मृत्यु शय्या पर, यहूदा को आशीष दी, जिसका अर्थ था गोत्र की अगुवाई। इसी प्रकार से, याकूब ने बड़े भाइयों को लांघते हुए युसूफ को - उसके दो पुत्रों, मनश्शे और एप्रैम, के द्वारा - जन्मसिद्ध अधिकार की विरासत को प्रदान किया। युसूफ के एक गोत्र के बजाय, उसके पुत्र दो गोत्र बने और कनान की भूमि के दोगुने हिस्से को पाया (48:20-22; यहोशू 16:1-17:18)। [5]दाऊद के समय में जाकर आशीष का यह पहलू परिपूर्ण होने लगा था (2 शमूएल 8:1-18)। [6]योराम, 2 इतिहास 21:8-10 में यहोराम भी कहलाता है। [7]फ्रांसिस ब्राऊन, एस. आर. ड्राईवर, ऐण्ड चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *अ हिब्रू एण्ड इंग्लिश लेक्सीकन आफ द ओल्ड टेस्टामेंट* (आक्सफॉर्ड: क्लैरडन प्रेस, 1962), 966. [8]यूनानी शब्द πόρνος *(पोरनोस)* का अर्थ "व्यभिचार" है जिसका तात्पर्य यह हुआ कि उसका कनानी स्त्रियों से लैंगिक संबंध था और इसके साथ ही उसने दो हित्ती स्त्रियों से विवाह करके अपनी माँ को दु:ख दिया था (27:46)। [9]अर्नेस्ट हेमिंगवे, *डेथ इन दि आफ़्टरनून* (न्यू यॉर्क: चार्ल्स स्क्राइबनर्स सन्स, 1932), 13. [10]जो ब्रुक्स, "यू लाईट उप माई लाईफ," ©1977; राइट्स एडमिनिस्टर्ड बाई यूनिवर्सल म्यूजिक पब्लिशिंग ग्रूप (UMPG)।

[11]वाल्टर स्कॉट *मारमिओन* 6.17. [12]विलियम एफ. अर्नडट एण्ड एफ. विल्बर गिंगरिच, *ए ग्रीक-इंगलिश लेक्सीकन आफ द न्यू टेस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चयन लिटरेचर*, 2nd एडीशन (शिकागो: यूनिवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस, 1979), 512.